

नई दिल्ली। कोरोना संक्रमण की वजह से देश में मरने वाले का आंकड़ा 1026 पहुंच गया है। बुधवार को मध्य प्रदेश में संक्रमित मरीजों ने दम तोड़ दिया। राज्य में मौतों की संख्या बढ़कर 130 हो गई है। इसमें 65 दैहिक और 23 उज्जैन के रहने वाले हैं। ऊपर ऊपर प्रदेश, तमिलनाडु में 2-2 मरीजों की जान चली गई। कर्नाटक में एक की मौत हुई। मॉलवार को रिकार्ड 7। संक्रमितों ने दम तोड़ा था। य अब तक एक दिन में हुई मौतों सबसे ज्यादा है। इसके पहले 2 अप्रैल को एक दिन में सबसे ज्यादा 60 मौतें हुई थीं। महाराष्ट्र अब तक 400 लोगों की मौत चुकी है। दूसरे नंबर पर गुजरात पहुंच गया है।

भोपाल में कोरोना के 500 मरीज : 42 संदिग्ध मरीजों में संक्रमण की पुष्टि !

रिपोर्ट में पुलिसकर्मी उनके परिवार सहित एक 2 साल की बच्ची की रिपोर्ट आई पॉजिटिव

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी का
कुक् भी पॉजिटिव निकला,
हालांकि अधिकारी की रिपोर्ट
निगेटिव आई है

भोपाल के ही अभी करीब 4500 सैंपल की रिपोर्ट आना बाकी है। संदिग्ध संक्रमित मरीजों की जांच रिपोर्ट वैसे भी 8 से 10 दिन बाद मिल रही है

भोपाल/ नवप्रदेश। राजधानी भोपाल में कोरोना का कहर थमने का नाम नहीं



भोपाल में जहांगीराबाद इलाका हॉटस्पॉट के रूप में चिह्नित है। फिर भी सुबह-शाम लोग घरों से बाहर निकलते हैं। इस इलाके में 75 संक्रमित मिल चुके हैं।

ले रहा है। दिल्ली, पुडुचेरी और स्थानीय स्तर पर हो रही जांचों की जैसे ही रिपोर्ट आती है मरीजों की संख्या में इजाफा हो रहा है। बुधवार को दोपहर भोपाल में हुई

सैलप की जांचों की जो रिपोर्ट आई है उसमें 42 लोगों को संक्रमण की पुष्टि हुई है। इन नए मिले संक्रमित मरीजों के साथ भीमाल में आंकड़ा 500 पर पहुंच गया है। राजधानी में कोरोना से मौत का आंकड़ा 14 पर पहुंच गया है और 163 ठीक होकर घर लौट चुके हैं। जारी हुई रिपोर्ट में मंगलवाड़ा इलाके के 5 संक्रमित मरीज हैं। एक पुलिसकर्मी और उसके परिवार के एक अन्य सदस्य की रिपोर्ट भी पॉजिटिव आई है। पुराने शहर के ही एक परिवार के 3 सदस्य संक्रमित पाए गए हैं। इसी इलाके की एक 2 साल की बच्ची को भी संक्रमण की पुष्टि हुई है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी का कुक भी पॉजिटिव निकला. **शेष पृष्ठ 7**

रिपोर्ट आने में देरी

मोपाल के ही अग्री करीब 4500 सैपल की रिपोर्ट आना बाकी है। सदियुध संक्रमित मरीजों की जांच रिपोर्ट वैसे भी 8 से 10 दिन बाद मिल रही है। इससे संक्रमण फैलने का खतरा और ज्यादा बढ़ गया है। रिपोर्ट आने में हो रही देरी की वजह से सदियुध मरीज को कई बार अस्पताल में भर्ती नहीं किया जा रहा है। घर में कोरैटाइन रहने की वजह से परिवार में संक्रमण बढ़ रहा है।

जहांगीराबाद में ही सबसे ज्यादा संक्रमण क्यों..

घनी बसाहट। गैस पीड़ित बुजुर्ग पहले संक्रमित हुए।
उनसे परिवार के दूसरे सदस्य संक्रमित हुए।
अस्पताल पहुंचने में देरी बड़ी वजह, तब तक संक्रमण फैलता रहा।

सोशल डिस्टेंसिंग का बार-बार उल्लंघन।

जहांगीराबाद की घनी बसाहट से सर्वे में परेशानी

मोपाल में जहांगीराबाद इलाका हॉटस्पॉट के रूप में चिह्नित हुआ है। यहां अबतक 75 मरीजों की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। इसके बाद स्वास्थ्य विभाग की टीम ने जांच का दायरा और व्यापक कर दिया है।

कर्मचारी कोरोना के मद्देनजर सभी आवश्यक गाइड लाइन का पालन करेंगे

**वल्लभ, सतपुड़ा और विंध्यांचल भवन
में 30 अप्रैल से शुरू होगा कामकाज**

राज्य में सामान्य कामकाज प्रारंभ हो सके, इसलिए यह कदम उठाया जा रहा है

नव प्रदेश संवाददाता

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज कहा कि गुरुवार 30 अप्रैल से राज्य मंत्रालय वल्लभ भवन के अलावा सतपुड़ा और विध्यांचल भवन में सरकारी कामकाज सभी सावधानियों को ध्यान में रखकर प्रारंभ हो जाएगा। शुरुआत में 30 प्रतिशत अधिकारी कमर्ची कार्यालय पहुंचेंगे और वे कोरोना के मद्देनजर सभी आवश्यक गाइड लाइन का पालन

पंजाब सरकार ने 2 हफ्ते और बढ़ाया लॉकडाउन

चंडीदा। कोरोना महामारी के चलते पंजाब सरकार ने लॉकडाउन को दो सप्ताह तक आगे बढ़ाने का फैसला किया है। हालांकि इस दौरान लोगों को चार घंटे की छूट दी जाएगी। इस बारे में घोषणा करते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने कहा कि लॉकडाउन के दौरान रेजिना सुबह 7 बजे से 11 बजे तक लोगों को चार घंटे की छूट दी जाएगी। इस दौरान लोग अपने घरों से बाहर आ सकते हैं और दुकानें

खुल रही होंगी। उन्होंने कहा कि हमारे राज्य में कर्फ्यू को दो और हफ्तों तक बढ़ाने को फैसला किया है। बला दें कि सामंतावली को पीएम नरेंद्र मोदी से चर्चा के दौरान कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने पीएम से लॉकडाउन बढ़ाने की मांग की है। हालाँकि कुछ राज्य ऐसे भी हैं, जिन्होंने पूर्ण लॉकडाउन के बजाय कुछ रियायतों के साथ लॉकडाउन लागू करने पर जोर दिया है। ऐसे में तीन मई को लॉकडाउन खत्म होने से शेष पृष्ठ 7 पर

दो पक्षों में विवाद कार्रवाई के निर्देश

इतना ही नहीं, स्वास्थ्यकर्मियों के चले जाने के बाद मोहल्ले के लोगों का दूसरे मोहल्ले के लोगों से विवाद हो गया। इस दौरान जमकर पत्थरबाजी हुई।

सके, इसलिए यह कदम उठाया जा रहा है।
मुख्यमंत्री ने कहा कि कोरोना पर नियंत्रण
संबंधी सुखद संकेत ये हैं कि पाजीटिव केस
प्रतिशत के आधार पर कम हो रहे हैं। मृत्यु दर
भी घटी है और **शेष पृष्ठ 7 पर**

कैडिला की एक दवाई सेप्सिवाक पर चंडीगढ़ में क्लिनिकल ट्रायल चल रहा है

**बस 3 महीने और,
भारत बना लेगा
कोरोना वैक्सीन !**

नई दिल्ली। पूरी दुनिया कोरोना संकट से उबरने की जद्दोजह में जुटी है। वायरस के संक्रमण की रोकथाम से लेकर इससे होने वाली बीमारी कोविड-19 के प्रभावी इलाज को लेकर शोध काफी तेज-शोर से चल रहा है। भारत में भी भिन्न-भिन्न दिशाओं में प्रयास हो रहे हैं। इसी क्रम में चंडीगढ़ में कैडिला की एक दवा सेल्सिवाक पर

शुरू हो गया है। यह दवा बैक्टीरिया से संक्रमण के कारण होने वाली बीमारी के इलाज में इस्तेमाल होती है। अब शोध में यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि क्या सेप्सिवाक कोविड-19 मरीजों के इलाज में भी कारगर साबित हो सकती है। चंडीगढ़

इस्थित पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन ऐंड रिसर्च में यह ट्रायल जारी है। ट्रायल प्रोग्राम के को-ऑर्डिनेटर डॉ. राम विश्वकर्मा ने बताया, चंडीगढ़ में सेप्सिवाक को एक दवाई के रूप में इस्तेमाल किए जाने का क्लिनिकल ट्रायल शुरू हो चुका है। हम उन बिना लक्षण वाले कोविड-19 मरीजों पर अलग से ट्रायल कर रहे हैं। उन्हें सेप्सिवाक को वैक्सिन के रूप में दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि अगर सेप्सिवाक टायल में खरा उतरा तो लाखों लोगों की जिंदगियां बच जाएंगी। उन्होंने कहा, कोविड-19 किसी मरीज में एक महीने तक टिका रह सकता **शेष पृष्ठ 7 पर**

**बैठक**

तीस प्रतिशत उपस्थिति से शुरू होंगे राज्य-स्तरीय शासकीय कार्यालय

प्रदेश में किसानों से 23 लाख मीट्रिक टन गेहूँ की रिकॉर्ड खरीदी : मुख्यमंत्री

जनसहयोग से कोरोना नियंत्रण प्रयासों में मिल रही है सफलता

डॉ शिशिर उपाध्याय

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि राज्य में कोरोना पर नियंत्रण के प्रयासों में निरंतर सफलता मिल रही है। पूरी सावधानी, सोशल डिस्टेंसिंग के साथ 30 अप्रैल से राज्य मंत्रालय, सतपुड़ा, विध्याचल और अन्य राज्य-स्तरीय कार्यालय 30 प्रितिवर अधिकारियों-कर्मचारियों की उपस्थिति के साथ प्रारंभ होंगे।

अधिकारियों के दल करेंगे निरीक्षण



मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि राज्य में कोरोना नियंत्रण के हरसंभव उपाय किए गए हैं। अधिक प्रभावित जिलों में

अधिकारियों के दल जाकर सभी पक्ष देखेंगे। ये दल जिलों में कैम्प कर निरीक्षण के बाद स्थानीय प्रशासन को कोरोना

वायरस पर नियंत्रण, उपचार, लॉकडाउन से संबंधित व्यवस्थाओं के निर्धारण में भी **शेष पृष्ठ 7 पर**

■ न्यूज गैलरी

लगातार समझाइश फिर भी घर में बैठने को तैयार नहीं लोग, सर्वे में चला पता

भोपाल। कोरोना वायरस का संक्रमण कम करने में जुटा जिला प्रशासन हर प्रयास कर रहा है, वहीं कुछ लोग हैं कि घरों में बैठने को तैयार ही नहीं। ऐसे लोगों को समझाइश और कार्रवाई करने के लिए मंगलवार को अलग-अलग थाना क्षेत्रों का अमला उतारा गया, जो अनाउसमेंट कर लोगों को घर में रहने की समझाइश दे रहा था। इसी के साथ वार्ड एक गांधी नगर से लेकर 18 तक में 30 टीमें उतारकर बड़े स्तर पर सर्वे किया गया। इसमें विभिन्न क्षेत्रों में सैनेटाइजेशन, थर्मल स्क्रीनिंग, जांच स्वास्थ्य टीमें ने किया, लेकिन कई लोग ऐसे हैं जो सर्वे के दौरान भी घर पर नहीं मिले, क्योंकि वे घर से बाहर घूम रहे थे। इस कारण कई लोगों के सर्वे पूरे नहीं हो सके। इसे घरों की सूची भी अलग से तैयार की गई है। ऐसे घरों की संख्या 500 से ज्यादा है, दो वार्डों में ये स्थिति है। दरअसल प्रशासन की तरफ से लगभग सभी कटेनमेंट एरिया का सर्वे करने के निर्देश हैं, लेकिन नवमान में जो स्थिति है उसे देखते हुए जहां छह और उससे ज्यादा पॉजिटिव केस हैं उन्हीं जगहों का सर्वे किया जा रहा है। इस सर्वे में बड़े स्तर पर आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता लगाई गई हैं, जिन्हें पीपीई किट दी गई है। ये लोग घर-घर जाकर सर्वे कर रही हैं, लेकिन कई जगह ऐसी स्थिति बन रही है कि घर में पांच सदस्यों में से एक या दो बाहर गए होते हैं। इनके सिर्फ नाम लिखे जा रहे हैं, जांच नहीं हो पा रही। शहर का सबसे ज्यादा संवेदनशील कटेनमेंट एरिया जहांगीराबाद की हालत तो ज्यादा खराब है। यहां लोग घरों में बैठ ही नहीं रहे हैं। पुराने शहर में जहां जमातियों का डेरा था उस स्थान पर कई जगह सर्वे कराए गए। यहां पर लोगों को देखकर लग रहा था कि लॉकडाउन का कोई असर नहीं है, उल्टा लोग सवाल पूछ रहे थे क्या राशन का सर्वे चल रहा है।

लॉकडाउन में आत्महत्या पन्ना के क्रॉरैटाइन सेंटर में युवक ने फांसी लगाई, लॉकडाउन में काम बंद हो जाने पर सागर से 5 साथियों के साथ आया था

नव प्रदेश संवाददाता

भोपाल/ पन्ना। पन्ना के अमानगंज शासकीय महाविद्यालय में बनाए गए क्रॉरैटाइन सेंटर में मंगलवार को सुबह एक युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। क्रॉरैटाइन सेंटर में युवक के 5 और दोस्त भी साथ हैं। इसके अलावा सेंटर में बाहर से लाए गए मजदूरों को भी रखा गया है। फिर युवक ने एक कमरे में खिड़की से रस्सी बांधकर फांसी लगा ली। पुलिस ने मामले की छानबीन शुरू कर दी है, फांसी लगाने की वजह सामने नहीं आई है। मृतक युवक 24 अप्रैल को सागर के गढ़ाकोटा से पन्ना के अमानगंज लाया था। सभी लोग वहां पर काम बंद हो जाने के कारण बेरोजगार हो गए थे। ऐसे में युवक और उसके पांच दोस्त अपने घर लौटे तो प्रशासन ने अमानगंज के क्रॉरैटाइन सेंटर में उन्हें रखा है। मंगलवार को ही युवक के पिता उसके गांव महेवा से मिलने भी आए थे। फांसी लगाने की वजह सामने नहीं आई है, पुलिस ने मामले की छानबीन शुरू कर दी है। मजदूरों की देखरेख, स्वास्थ्य परीक्षण और खाने-पीने आदि की व्यवस्था यहां की गई है। अमानगंज थाना प्रभारी राकेश तिवारी ने बताया कि युवक महेवा निवासी है। 24 अप्रैल को सागर जिले के गढ़ाकोटा से अपने पांच साथियों सहित पन्ना आया हुआ था। स्वास्थ्य परीक्षण के लिए इन्हें अमानगंज शासकीय महाविद्यालय में बनाए गए क्रॉरैटाइन सेंटर में रखा गया था।

याद-ए-रमजान

भोपाल में तोपों से होता था चांद का ऐलान, रातभर खुली रहती थी चटोरी गली, इस बार टूट गई कई परंपराएं

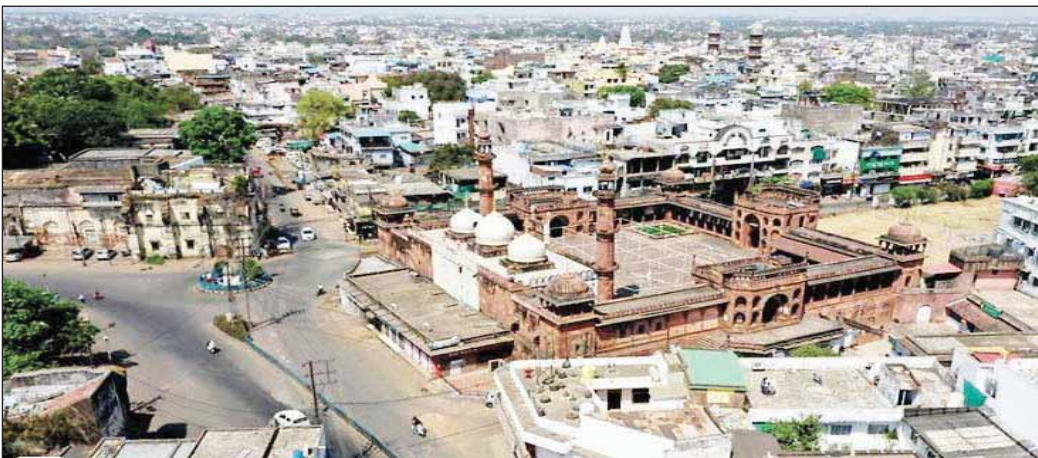
नवाबों के दौर से ही भोपाल में रही है रमजान की एक अलग रवायत, पहली बार जुमे की नमाज भी नहीं हो पा रही

प्रोफेसर नौमान बोले, 18वीं सदी में भी प्लेग महामारी के चलते बने थे कुछ ऐसे ही हालात

नव प्रदेश संवाददाता

भोपाल। रमजान के मौके पर भोपाल की गलियों को भले ही इस बार लॉकडाउन ने सूना कर दिया हो, लेकिन लोगों के उत्साह में कोई कमी नहीं आई है। लोग मस्जिदों में नहीं जा पा रहे लेकिन घरों में इबादत में लगे हैं। नवाबों के दौर से ही भोपाल में रमजान की एक अलग रवायत रही है। चाहे खाना-पीना हो या तोपों से चांद का ऐलान करने की परंपरा रही हो। चाहे चटोरी गली के स्वादिष्ट व्यंजन हों या चौक बाजार की रौनक। भोपाल की अपनी एक अलग पहचान है। वे कहते हैं कि, ईद के एक दिन पहले चांद रात में भी शहर में जमकर खरीदी होती है। भोपाल में तो यह परंपरा भी रही है कि चांद रात के दिन कोई व्यापारी किसी ग्राहक को वापिस नहीं लौटाता। मुनाफा न कमाकर या थोड़ा बहुत नुकसान उठाकर भी माल दे देता है। ऐसा मुस्लिम और हिंदू दोनों व्यापारी ही सालों से करते आ रहे हैं।

फतेहगढ़ किले के बुर्ज पर रखी तोप से होता था ऐलान



जो बाजार रातभर गुलजार होते थे, वो सूने पड़े हैं

रमजान पर लखौरापुरा, इब्राहिमपुरा, चौक बाजार, लोहा बाजार, आजाद मार्केट देर रात तक गुलजार हुआ करते थे। खाने-पीने के साथ ही कपड़ा, ज्वेलरी, जूते-चप्पल, सजावट का सामान, इलेक्ट्रॉनिक आइटम के साथ ही वाहनों की भी जमकर खरीदी हुआ करती थी, लेकिन अभी सब ठंडा है। किराना व्यापारी महासंघ, भोपाल के महासचिव अनुपम अग्रवाल कहते हैं कि, 20 से 25 करोड़ की ग्राहकी तो प्रभावित हुई है, लेकिन यह नुकसान नहीं है क्योंकि ग्राहक का पैसा ग्राहक के पास है और व्यापारी का माल व्यापारी के पास है। 3 मई के बाद खूट मिलती है तो अच्छी ग्राहकी हो सकती है। किराना का तो पूरा सामान सलाई किया ही जा रहा है।

एनसीईआरटी के डिपार्टमेंट ऑफ लैंग्वेज में प्रोफेसर रहे मोहम्मद नौमान खान कहते हैं कि, कई ऐसी बातें हैं, जो भोपाल को एक विशेष पहचान देती हैं। यहां नवाबों के दौर में फतेहगढ़ किले के बुर्ज पर रखी तोप चलकर चांद के दिखने का ऐलान किया जाता था। सहरी और इफ्तार के वक्त भी तोप चलती थी। उस समय तोप की आवाज मंडीदीप से बैरसिया तक गूंजती थी, क्योंकि तब न शहर में वाहनों की आवाजों का इतना

दिन में दुकानें नहीं खुला करती थीं

प्रोफेसर नौमान के मुताबिक, नवाबी दौर में शहर में रमजान के दौरान दिन में दुकानें नहीं खुला करती थीं, ऐसा इसलिए किया जाता था ताकि रोजा रखने वालों का कहीं ध्यान न भटके। खाने-पीने का मन में लालच न आए। पकवानों के पकने की खुशबू न आए। तब दुकानों पर दोपहर में पकवानों की तैयारी शुरू होती थी और शाम के समय इन्हें पकाया जाता था। इफ्तारी के बाद लोग दुकानों पर खाने-पीने पहुंचते थे। अब भी बाजार में इफ्तारी के बाद रौनक होती है, लेकिन अब दुकानें दिन में भी खुली रहती हैं।

सफेद रंग से सजा होता था शहर

नवाबी रवायतों की गहरी समझ रखने वाले आर्किटेक्ट एसएम हुसैन कहते हैं कि, रमजान शुरू होते हैं पूरे भोपाल में रौनक आ जाया करती थी। पुराने समय में सरकारी बिल्डिंगों से लेकर घरों तक को चूने से पुतावाया जाता था। हर जगह सफेद रंग दिखता था, क्योंकि यह पेंगबर साहब का पसंदीदा रंग है। हर मस्जिद में तरावीह की जाती थी।

शोर नहीं था, जितना आज है। यह काम सरकारी बजट से ही होता था और रियासत ही इसका पूरा प्रबंध करती थी। बाद में यह सिलसिला बंद हो गया और फिर जगह-जगह गोले छोड़कर ऐलान किया जाने लगा। प्रोफेसर कॉलोनी में रहने वाले फैजल मोहम्मद खान बताते हैं कि, नवाबी दौर में तो सुबह 4 बजे के करीब आदमी आकर आवाज लगाते थे कि सहरी कर लीजिए। जो आवाज देने आता था, उसे ईनाम भी दिया जाता था।

इस बार टूट गई कई परंपराएं

प्रो. नौमान कहते हैं कि, इस बार कई परंपराएं लॉकडाउन की वजह से टूट गईं। पहली बार मस्जिदों में नमाज नहीं हो रही। हाफिज सामूहिक तौर पर मस्जिदों में तरावीह करवाया करते थे, लेकिन इस बार सबको घर पर ही करना है।

जुमे की नमाज भी थायद पहली दफा मस्जिदों में नहीं हो पा रही। जुमे की नमाज घरों में नहीं पड़ी जा सकती।

प्रो. नौमान के मुताबिक, 18वीं सदी में भी प्लेग महामारी के चलते इस तरह की दिक्कतें आई थीं। तब के बाद अब 2020 में ऐसे हालात बने हैं, जब सब बंद हो गया है।

इस बार इफ्तार पार्टी की परंपरा भी टूट गई क्योंकि लोग एक-दूसरे से मिल ही नहीं सकते। न शॉपिंग, न खाना-पीना। हालांकि वे कहते हैं कि, यह सब कदम हमारी जिंदगी बचाने के लिए उठाए गए हैं, जिंदगी लेगी तो ये सब फिर शुरू हो जाएगा।

चौक बाजार में शीर खुरमा, सेवइयां,

शीरमाल आदि व्यंजन खाने बड़ी संख्या में मुस्लिम लोग जाया करते थे। शहर में सामूहिक इफ्तारी का कल्चर भी पुराने समय से रहा है। रात में बाजार गुलजार होते हैं। चटोरी गली रातभर खुलती है। तरावीह पढ़ने के बाद लोग वहां जाकर स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठाते हैं। कपड़े, जूतों, ज्वेलरी की दुकानें रात में खुलती हैं और दिन में बंद हुआ करती हैं। लोग रात में शॉपिंग करते हैं। पूरा बाजार रात में गुलजार होता है। खाने-पीने और शॉपिंग का यह कल्चर अभी भी जिंदा है, इस बार बस लॉकडाउन ने रमजान का रंग फीका कर दिया है।

मोहम्मद नसीम खान बताते हैं, जिस गंगा जमुनी तहजीब की बात देशभर में की जाती है, भोपाल पुराने समय से ही इसका गवाह रहा है। रमजान माह में जामा मस्जिद के बाहर तक नमाजी नमाज पड़ा करते थे, तब हिंदू कपड़ा व्यापारी थान में नया कपड़ा निकालकर नमाजियों को बैठने के लिए दे दिया करते थे। यह माईघारा भोपाल में ही देखने को मिला करता था।

नशे की लत ऐसी कि 10 का गुटखा 60 रु. में लेने 5 किमी तक का सफर कर रहे हैं लोग

400 की जगह 800 रुपए किलो तक सुपारी खरीद रहे लोग

नव प्रदेश संवाददाता

भोपाल/ सीहोर। लॉकडाउन के एक महीने से भी ज्यादा बीत चुका है। ऐसे में किराना दुकानों पर भी कई जरूरी खाद्य सामग्री की कमी आने लगी है। इस बीच जो लोग गुटखा और सिगरेट के शौकीन हैं उनके सामने लॉकडाउन ने समस्या खड़ी कर दी है। हालत यह है कि इसकी लत ऐसी है कि 10 रुपए के गुटखा पाउच को लेने के लिए लोग 5 किमी तक का सफर तय कर शहर में आ रहे हैं। यहां पर लॉक डाउन की छूट के समय यह मिल जाते हैं। अब गुटखा, पाउच सहित पान मसाला की कीमत आसमान छू रही है। शहर की कई दुकानों में 10 रुपए में मिलने वाले गुटखे की कीमत अब 60 रुपए हो गई है। यह सब तो ठीक है, लेकिन लोग बाजार खुलने के दौरान इसे लेने तीन से पांच किमी तक पहुंच रहे हैं।



गई है। यह सब तो ठीक है, लेकिन लोग बाजार खुलने के दौरान इसे लेने तीन से पांच किमी तक पहुंच रहे हैं।

थूकने पर जुर्माना

कोरोना संक्रमण को देखते हुए पूरे प्रदेश में नया आदेश हाल ही में जारी किया गया है। इसमें सार्वजनिक स्थान पर थूकने पर एक हजार रुपए का जुर्माना हो सकता है। इसके पूर्व नशे से संबंधित पदार्थ बाजार में न बेचने के दुकानदारों को निर्देश दिए थे। निर्देश के बाद भी दुकानों में यह गुटखा, पाउच, बीड़ी, सिगरेट

दोस्त के साथ नशे के लिए कोल्डड्रिंक में एथेनॉल मिलाकर पिया, मौत

भोपाल। नशे की लत ऐसी है कि लोग अपनी जान की परवाह भी नहीं कर रहे हैं। लॉकडाउन में शराब की चाहत ने अभी तक भोपाल में 2 लोगों की जान ले ली है। आरडी मेमोरियल कॉलेज ऑफ नर्सिंग के 1 पीजी छात्र की मौत हो गई है। बताया जा रहा है कि 3 दिन पहले उसने अपने दोस्त के साथ कोल्डड्रिंक में एथेनॉल मिलाकर पिया था। तबियत बिगड़ने के बाद उसके साथी उसे अस्पताल ले गए, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। वहीं, उसका दोस्त कम पिया था तो उसकी जान बच गई है। युवक भोपाल के शबरीनगर में रहता था। उसकी मौत सोमवार को तड़के हुई है। कमलानगर एसएचओ विजय सिसोदिया ने बताया कि मृतक 26 वर्षीय रवेश साहू सागर जिले के गढ़ा का रहने वाला है। पुलिस ने कहा कि साहू अपने दोस्त अमन मेहरा के साथ शबरी नगर में किराए के घर में रहता था। दोस्त की मौत के बाद मेहरा ने पुलिस को बताया कि शनिवार शाम साहू कहीं से एथेनॉल लेकर आया।

मप्र: फोन नहीं उठाने वाले कलेक्टरों पर गिरेगी गाज

नव प्रदेश संवाददाता

भोपाल। कोरोना जैसी महामारी के बीच भी प्रदेश के कई कलेक्टर अपने आपको मालिक की भूमिका से अलग नहीं कर पा रहे हैं। यही वजह है कि वे न तो आम आदमी का फोन उठाते हैं और न ही जनप्रतिनिधियों का। हालात इससे समझ सकते हैं कि एक मंत्री तक का फोन भी कलेक्टर ने उठाना मुनासिब नहीं समझा। कलेक्टरों की इस तरह की कार्यप्रणाली की कई शिकायतें सरकार तक पहुंच चुकी हैं। इसके बाद अब माना जा रहा है कि कोरोना महामारी के हालात में सुधार होते ही उन पर तबादले की गाज गिरना तय है। प्रदेश के कई कलेक्टरों का हाल यह तब है जब स्वयं मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव और मंत्री इस संकट से निकलने और आमजन को राहत देने के लिए लगातार सोलह-सोलह घंटे तक काम कर समस्याओं के निराकरण का प्रयास कर रहे हैं। कलेक्टरों द्वारा फोन नहीं उठाने की वजह से कई जिलों में गरीबों और किसानों की सुनवाई ही नहीं हो पा रही है।

पीड़ित अपनी गुहार लेकर जनप्रतिनिधि के पास पहुंचते हैं तो उनका भी यही रोगा रहता है कि क्या करें, कलेक्टर व अन्य बड़े अधिकारी उनका फोन ही नहीं उठाते हैं। यही वजह है कि अब कलेक्टरों को लेकर मिल रही शिकायतों पर सरकार गंभीर है। अब सिर्फ हालात सामान्य होने का इंतजार किया जा रहा है।

मंत्री को भी लगाने पड़े कई बार फोन

बुन्देलखंड अंचल के तहत आने वाले एक जिले की कमान एक महिला अफसर के पास है। मंत्री के दौरे के समय स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने कलेक्टर की शिकायत करते हुए बताया कि न

तो उनके फोन उठाए जाते हैं और न ही शिकायत पर कोई कार्यवाई ही की जाती है। इसके उलट कलेक्टर का उत्तर होता है कि यह काम उनका नहीं है। साथ ही यह भी कहा जाता है कि बार-बार फोन न लगाया करें। शिकायत के बाद जब मंत्री ने खुद ही कलेक्टर को फोन लगाया, तो वह भी नहीं उठा। लगातार फोन करने के बाद कलेक्टर ने मंत्री का फोन उठाया। इसको लेकर दोनों में बहस भी हुई। इसके बाद भी कलेक्टर के कामकाज पर कोई फर्क नहीं पड़ा है। इसके बाद अब जनप्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री के साथ संगठन को भी महिला कलेक्टर की शिकायत की है।

प्लाज्मा थेरपी से कोरोना को मात? भोपाल में पहली बार मरीज को दी गई

भोपाल में सुनीता अग्रवाल ने डोनेट की प्लाज्मा , जबलपुर की रहने वाली हैं सुनीता अग्रवाल

क्रिटिकल मरीज को दी गई है प्लाज्मा थेरपी

मध्यप्रदेश की पहली महिला डोनर हैं सुनीता अग्रवाल

नव प्रदेश संवाददाता

भोपाल। कोरोना के इलाज के लिए देश के कई राज्यों में प्लाज्मा थेरपी को मंजूरी दी गई है। मध्यप्रदेश में भी शिवराज सरकार ने प्लाज्मा थेरपी को मंजूरी दी है। इंदौर और भोपाल में कोरोना को हराने वाले लोगों ने प्लाज्मा डोनेट किया है।



पहली बार मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में पहली बार एक मरीज को प्लाज्मा थेरपी दी गई है। केंद्र सरकार ने

चेताया है कि प्लाज्मा थेरपी का इलाज के तौर पर इस्तेमाल न हो, सिर्फ रिसर्च के लिए क्लीनिकल ट्रायल के रूप में

इस्तेमाल हो। ऐसे में यह सवाल उठ रहा है कि क्या प्लाज्मा थेरपी से कोरोना को मात दिया जा सकता है। भोपाल में एक क्रिटिकल मरीज को प्लाज्मा थेरपी दिया गया है।

सुनीता बर्नी डोनर

भोपाल में प्लाज्मा डोनर सुनीता अग्रवाल बर्नी हैं। सुनीता जबलपुर की रहने वाली हैं, 20 मार्च को इनकी रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई थी। बहुत पहले यह ठीक होकर घर लौट चुकी हैं। सुनीता के साथ पति और बेटी भी कोरोना से संक्रमित थे। अब सभी लोग स्वस्थ हैं। जानकारी के अनुसार मंगलवार देर रात

सुनीता ने भोपाल के चिरायु अस्पताल में अपना प्लाज्मा डोनेट किया है।

मरीज को दी गई प्लाज्मा थेरपी

जानकारी के अनुसार भोपाल के चिरायु अस्पताल में भर्ती एक मरीज की स्थिति गंभीर हो गई है। सोमवार की रात मरीज के बेटे ने सुनीता अग्रवाल से प्लाज्मा के लिए संपर्क किया। उन्होंने सुनीता अग्रवाल से कहा कि भोपाल में बी पॉजिटिव ब्लड रूप वाले कोरोना पेशेंट को प्लाज्मा की जरूरत है। उसके बाद सुनीता ने डोनेट करने के लिए सहमति दे दी। दरअसल, मंगलवार को ही चिरायु अस्पताल से 28 लोग कोरोना

को हराकर घर लौटे हैं। उसमें कई बच्चे भी शामिल हैं। सीएम शिवराज सिंह चौहान ने उन बच्चों से वीडियो कॉल के जरिए बात भी की। साथ ही उनका हाल जाना।

पहली महिला डोनर हैं सुनीता

सुनीता से पहले इंदौर में भी ठीक होकर घर लौटे 2 लोगों ने प्लाज्मा डोनेट किया है। सुनीता अग्रवाल मध्यप्रदेश की पहली महिला प्लाज्मा डोनर बन गई हैं। डॉक्टरों ने सुनीता के हौसले की तारीफ की है। कहा जा रहा है कि सुनीता अग्रवाल शापद देश की पहली महिला प्लाज्मा डोनर हैं।

संपादकीय

चीन की चोरी उपर से सीनाजोरी

सारी दुनिया में जानलेवा कोरोना वायरस फैलाने वाला चीन अब चोरी उपर से सीनाजोरी वाली कहावत को चरितार्थ कर रहा है। चीन के वुहान शहर से पुरी दुनिया में कोरोना वायरस फैला और इसके चलते लाखों लोग कोरोना वायरस की चपेट में आ गए और बड़ी संख्या में लोग बेमौए मारे गए। यही नहीं बल्कि कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए अनेक देशों में लॉकडाउन और कर्फ्यू लगाने की नौबत आ गई जिसकी वजह से सारे काम धंधे उप हो गए और अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली और आस्ट्रेलिया जैसे देशों की अर्थव्यवस्था चरमरा गई। भारत में भी कोरोना वायरस के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था पर विपरित प्रभाव पड़ा है। ऐसी स्थिति में पूरी दुनिया में चीन के खिलाफ आक्रोश फैलाना स्वाभाविक है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कोरोना वायरस को चीनी वायरस का नाम दिया है और यह ओराप लगाया है कि चीन की वजह से ही पुरी दुनिया में व्यापक स्तर पर जन और धन की हानी हुई है जिसकी क्षतिपूर्ती चीन को ही करनी होगी। अमेरिका ने कोरोना वायरस के जनक चीन के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय जांच की मांग की है जिसका आस्ट्रेलिया ने भी समर्थन किया है। अन्य यूरोपीय देश भी इसके लिए चीन को कसूरवार ठहरा रहे है। रूस ने भी साफ कहा है कि सारी दुनिया में कोरोना वायरस का संक्रमण फैलाने के लिए चीन ही जिम्मेदार है। इससे चीन बौखला गया है और वायरस जांच की जरूरत ही नहीं बता रहा है। उसका तर्क है कि इस तरह की जांच का कोई नतीजा नहीं निकलेगा, पहले भी दुनिया में कई बार महामारी फैल चुकी है और उसकी जांच का कोई नतीजा सामने नहीं आया है। चीन ने तो आस्ट्रेलिया को खुली धमकी दी है कि यदि वह इस मामले की अंतरराष्ट्रीय स्तर जांच का समर्थन करेगा तो चीन आस्ट्रेलिया का आर्थिक अहिष्कार कर देगा। जाहिर है चीन के मन में चोर है इसी लिए वह इस मामले की जांच से घबरा रहा है वैसे भी चीन ने कोरोना वायरस को लेकर कई बार झूठ बोला है। सबसे पहले तो उसने चीन के लोगों को ही गुमराह किया और कोरोना संक्रमित लोगों की मौत के आंकड़े छिपाए। दुनिया को भी उसने मुगालते में रखा और जानबूझ कर कोरोना वायरस के बारे में तथ्यों को छिपाए रखा। इससे स्वह है कि कोरोना वायरस को दुनिया में फैलाने के लिए चीन ही सीधे तौर पर जिम्मेदार है और वह अपनी इस जिम्मेदारी से बच नहीं सकता। सारी दुनिया को अब चीन के खिलाफ एक जुट होना पडेगा और यदि वह दोषी पाया जाता है तो उसके खिलाफ सबको मिलकर कार्यवाही करनी होगी।

विचार

कोरोना: संकट में अवसर

संकट के इस दौर में सुकून देने वाली एक खबर यह है कि चीन छोड़कर भारत में मैन्युफैक्चरिंग इकाई लगाने की इच्छुक लगभग 1000 कंपनियों ने भारत सरकार से संपर्क साधा है। इनमें कम से कम 300 कंपनियां मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, मेडिकल डिवाइसेज, टेक्सटाइल्स और सिंथेटिक फैब्रिक्स के क्षेत्र में भारत में फैक्ट्रियां लगाने के लिए सरकार से सक्रिय संवाद में हैं। अगर बातचीत सफल होती है तो कोरोना संकट से तबाह दिख रही हमारी अर्थव्यवस्था में एक नई जान आएगी। जब चीन में कोरोना के असर के चलते विदेशी कंपनियों का कामकाज ठप पड़ा था, तब कई विशेषज्ञों ने यह बात कही थी कि भारत के लिए एक बड़ा अवसर पैदा होने जा रहा है। पिछले दिनों विभिन्न राज्यों के मुख्यांत्रियों से बात करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस ओर इशारा करते हुए कहा था कि राज्य अगर रिफॉर्म करने की दिशा में आगे बढ़ते हैं, तो इस संकट को हम बहुत बड़े अवसर में बदल सकते हैं।

दरअसल आज की तारीख में जापान, दक्षिण कोरिया और ऑस्ट्रेलिया की बहुत सारी कंपनियां भारत को वैकल्पिक मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में देखती हैं। इनमें पहले दो मुल्कों के पास जमीन की जबर्क़ी तीसरे के पास मैनपावर की काफी कमी है। भारत उन्हें मैन्युफैक्चरिंग के लिए पर्याप्त जमीन, प्रशिक्षित मैनपावर और अच्छा-खासा बाजार उपलब्ध करा सकता है। इन विदेशी कंपनियों के रुख को भांपकर भारत सरकार ने कोरोना संकट से उबरने के बाद मेक इन इंडिया को गति देने के मकसद से अभी भी काम करना शुरू कर दिया है। इस अभियान को बढ़ावा देने के लिए उद्योग और वित्त मंत्रालय के साथ तमाम देशों में मौजूद भारत के दूतावास भी गंभीरता से लगे हुए हैं। देश में मैन्युफैक्चरिंग को मजबूती देने के लिए केंद्र सरकार ने पिछले साल सितंबर में कॉर्पोरेट टैक्स को घटाकर 25.17 फीसदी कर दिया था, जबकि नई फैक्ट्रियां लगाने वालों के लिए इसको घटाकर 17 फीसदी पर ला दिया था, जो दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों से कम है। इसके अलावा कुछ और बातें भी भारत के हक में जाती हैं। उसमें सबसे प्रमुख है सस्ते प्रशिक्षित श्रम की उपलब्धता। श्रम की लागत भारत में बांग्लादेश आदि की तुलना में काफी बड़ी है, फिर भी यह चीन से नीचे है। हमारे देश में पैंतीस साल से कम उम्र की सबसे बड़ी जनसंख्या है और साइंस-इंजीनियरिंग ग्रेजुएट्स की बहुत बड़ी तादाद हमारे पास है। कुल मिलाकर सस्ता श्रम, बड़ा टैलेंट पूल और स्किलड मैनपावर की उपलब्धता भारत को बाकी देशों की तुलना में काफी सस्ता और आकर्षक बना देती है। दुनिया में सबसे अधिक अंग्रेजी बोलने वाले वाले भी भारत में ही हैं, जिसकी कमी चीन में एक बड़ी समस्या है।

आज की तारीख में सबसे खास बात यह कि भारत ने कोरोना से



ऋषि रंजन

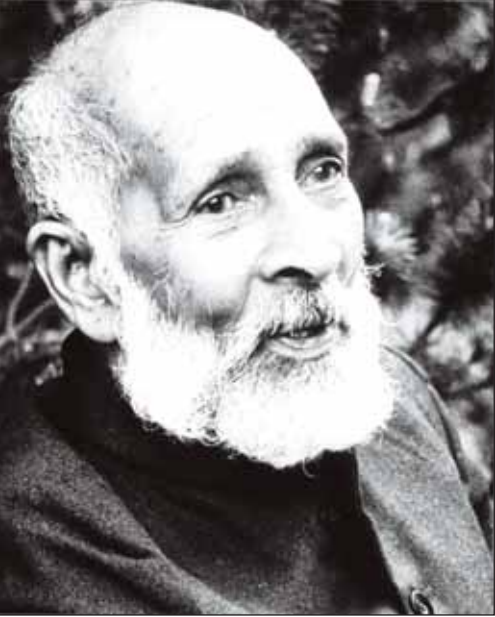
बाबूजी महाराज मानते थे कि चेतना का ऋत्मिक विकास हर मनुष्य का जन्म-सिद्ध अधिकार है तथा हर सच्चे जिज्ञासु को इसे निःशुल्क प्रदान किया जाना चाहिए। उनका मानना था कि एक सच्चा गुरु वास्तव में एक परम सेवक होता है। वे किसी भी तरह के जात-पात, धर्म, राष्ट्रीयता अथवा स्त्री-पुरुष का भेद-भाव किए बगैर आजीवन मानव जाति की सेवा करते रहे। उनका कहना था कि भौतिक और आध्यात्मिक जीवन पक्षी के दो पंखों की तरह हैं जो साथ-साथ चलते हैं। गृहस्थ जीवन प्रेम तथा त्याग जैसे गुणों को सीखने के लिए सबसे उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है। उन्होंने वक्त के साथ बदलती जरूरतों के अनुकूल प्राचीन राज योग पद्धति को सरलीकृत व परिष्कृत किया ताकि हर एक व्यक्ति गृहस्थ जीवन में रहते हुए इसका अग्यास करके लाभ उठा सके।

आध्यात्मिकता के वैज्ञानिक श्री रामचन्द्र

आज दुनिया भर में चर्चित श्री रामचंद्र मिशन के संस्थापक श्री रामचन्द्र आध्यात्मिकता के एक महान वैज्ञानिक थे। लोग उन्हें प्यार से ‘बाबूजी’ कहते हैं। उन्होंने एक वैज्ञानिक की तरह आध्यात्मिकता का वर्णन किया है। उन्होंने बताया कि हमारा स्थूल भौतिक रूप न तो आकस्मिक है और न ही संयोगवश। यह दरअसल विकास की धीमी प्रक्रिया का परिणाम है। उस अदृश्य शक्ति का जिससे ब्रह्मांड का निर्माण हुआ उसे परमतत्व का आदि दिव्य-मनस कह सकते हैं। योग में प्राथमिक बात ‘वैयक्तिक-मन’ का उचित नियमन है जो बेचैन रहता है। यदि आप अपने ‘वैयक्तिक-मन’ को ‘आदि-मन’ के स्तर तक ला सकते हैं तो उस वास्तविक सत्य और ईश्वरत्व की अनुभूति पा सकते हैं। अपनी इस नितान्त वैज्ञानिक खोज के साथ बाबूजी महाराज आध्यात्मिकता के क्षेत्र में एक नई क्रान्ति लेकर आए। उन्होंने पुरातन और बहुत समय से भूली हुई योगिक प्राणाहुति की तकनीक को परिष्कृत किया और इसे जीवन का ध्येय प्राप्त करने के लिए सीधे और अचूक मार्ग के रूप में मानव पूर्णता के उस उच्चतम स्तर तक जिसे ईश्वरत्व कह सकते हैं, ले जाने के लिए प्रस्तुत किया। यह पुरातन तकनीक मानवों के रूपांतरण के लिए दिव्य ऊर्जा का इस्तेमाल करती है। योगिक प्राणाहुति मूल स्रोत से निकलने वाला एक पवित्र उत्सर्जन है। चूंकि यह स्रोत से उत्सर्जित है इसीलिए इसमें वह क्षमता है कि यह हमें उस स्रोत तक ले चल सके। अध्यात्म के इतिहास में यह अद्वितीय है। मानव विकास के उच्चतम लक्ष्य यानी ईश्वरत्व की प्राप्ति इसी जीवन में संभव बनाने की इसकी क्षमता आश्चर्यजनक है।

बाबूजी महाराज मानते थे कि चेतना का क्रमिक विकास हर मनुष्य का जन्म-सिद्ध अधिकार है तथा हर सच्चे जिज्ञासु को इसे निःशुल्क प्रदान किया जाना चाहिए। उनका मानना था कि एक सच्चा गुरु वास्तव में एक परम सेवक होता है। वे किसी भी तरह के जात-पात, धर्म, राष्ट्रीयता अथवा स्त्री-पुरुष का भेद-भाव किए बगैर आजीवन मानव जाति की सेवा करते रहे। उनका कहना था कि भौतिक और आध्यात्मिक जीवन पक्षी के दो पंखों की तरह हैं जो साथ-साथ चलते हैं। गृहस्थ जीवन प्रेम तथा त्याग जैसे गुणों को सीखने के लिए सबसे उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है। उन्होंने वक्त के साथ बदलती जरूरतों के अनुकूल प्राचीन राज योग पद्धति को सरलीकृत व परिष्कृत किया ताकि हर एक व्यक्ति गृहस्थ जीवन में रहते हुए इसका अभ्यास करके लाभ उठा सके। उन्होंने कहा कि दिव्य व्यक्तित्व के धरती पर मौजूद होने के कारण आजकल साक्षात्कार अत्यंत सरल हो गया है। लोग आम तौर पर मुक्ति के आगे सोच ही नहीं पाते और उसे ही

वे मानव पहुँच की अंतिम सीमा मान लेते हैं। परंतु यह विचार ग़लत है। हकीकत यह है कि मुक्ति तो दिव्य मार्ग की



मिशन के संस्थापक श्री रामचन्द्र की जयंती (30 अप्रैल) पर विशेष

30 अप्रैल, 1899 में शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश) में बाबूजी का जन्म हुआ था। जून, 1922 में बाईस साल की उम्र में उनकी गैट अपने गुरुदेव से हुई। संयोगवश उनका नाम भी रामचन्द्र ही था जो फतेहगढ़ में रहते थे। प्यार से लोग उन्हें लालाजी कहते थे। अपने गुरुदेव के पवित्र नाम को सम्मानित करने के लिए उन्होंने 1945 में श्री रामचन्द्र मिशन की स्थापना की। उस समय की यह छोटी सी शुरुआत आज अपने 75वें साल में है। इसके गर्म से उपजा श्री रामचंद्र मिशन अब 140 से अधिक देशों में फैल चुका है। करोड़ों लोग इसकी दिव्य रूपांतरण की प्रक्रिया से लाभान्वित हो रहे हैं। भारत में हैदराबाद से 50 किलोमीटर दूर रंगा रेड्डी जिले में चेन्नुर गाँव के पास स्थित कान्हा शांति वनम् में 1400 एकड़ के परिसर में श्री रामचंद्र मिशन का अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय है।

निम्नतम कोटि की उपलब्धि है। उसके आगे अभी बहुत कुछ हासिल करने के लिए बाकी है। यह तो अनंत सारार है जिसका विस्तार अपरिमित है, असोमित है। समाधि की वास्तविक अवस्था वह है जिसमें इंसान पवित्र और सरल

असलियत से हर क्षण जुड़ा रहता है, चाहे वह सांसारिक काम-काज और दायित्वों में हमेशा कितना ही व्यस्त क्यों न हो। बकौल बाबूजी, इसी को सहज-समाधि कहते हैं जो श्रेष्ठ उपलब्धियों में से एक है।

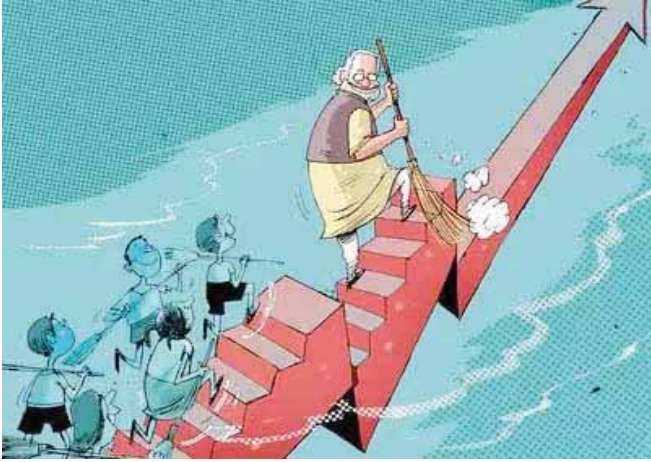
आज श्री रामचंद्र मिशन संसार के लगभग हर देश में मौजूद हैं और करोड़ों मनुष्य इससे अपनी मानवीय प्रकृति का रूपांतरण हृदय में स्थित उस दिव्य प्रकृति में कर रहे हैं। इन अभ्यासों से मनुष्य अहंकार की कैद से अहंकार से मुक्ति की ओर, साकार पूजा से निराकार की ओर, संकुचन से विस्तार की ओर, बेचैनी से चैन की ओर, बनावट से असल की ओर, हठ से स्वीकार्यता की ओर, असन्तुलन से सन्तुलन की ओर, अँधेरे से उजाले की ओर, भारीपन से हल्केपन की ओर, स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर, ‘यहाँ और अभी’ से शाश्वत व समय-रहित अस्तित्व की ओर, परिधि से अस्तित्व के उद्गम, स्रोत या उच्च स्व की ओर तेजी से रूपांतरित हो रहा है।

30 अप्रैल, 1899 में शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश) में बाबूजी का जन्म हुआ था। जून, 1922 में बाईस साल की उम्र में उनकी भेंट अपने गुरुदेव से हुई। संयोगवश उनका नाम भी रामचन्द्र ही था जो फतेहगढ़ में रहते थे। प्यार से लोग उन्हें लालाजी कहते थे। अपने गुरुदेव के पवित्र नाम को सम्मानित करने के लिए उन्होंने 1945 में श्री रामचन्द्र मिशन की स्थापना की। उस समय की यह छोटी सी शुरुआत आज अपने 75वें साल में है। इसके गर्भ से उपजा श्री रामचंद्र मिशन अब 140 से अधिक देशों में फैल चुका है। करोड़ों लोग इसकी दिव्य रूपांतरण की प्रक्रिया से लाभान्वित हो रहे हैं। भारत में हैदराबाद से 50 किलोमीटर दूर रंगा रेड्डी जिले में चेन्नुर गाँव के पास स्थित कान्हा शांति वनम् में 1400 एकड़ के परिसर में श्री रामचंद्र मिशन का अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय है। श्री रामचंद्र मिशन के वर्तमान वैश्विक गाइड श्री कमलेश पटेल (दाजी) ने हाल ही में इस परिषद में विश्व का सबसे बड़ा ध्यान केंद्र आध्यात्मिकता के जिज्ञासुओं को सर्मापित किया। इसके मेडिटेशन हॉल में एक साथ एक लाख लोग बैठकर सामूहिक ध्यान कर सकते हैं। सामूहिक ध्यान बाबूजी की तमाम वैज्ञानिक-आध्यात्मिक खोजों की श्रंखला में एक बड़ी और महत्वपूर्ण नेमत है। बाबा रामदेव से लेकर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद और बैडमिंटन स्टार पी.वी. सिन्धु से लेकर कई राज्यों के राज्यपाल तक इस गौरवशाली क्षण के गवाह बने।

लघु उद्योगों के लिए जागी उम्मीद की किरण ?

अगर बातचीत सफल होती है तो कोरोना संकट से तबाह दिख रही हमारी अर्थव्यवस्था में एक नई जान आएगी। दरअसल आज की तारीख में जापान, दक्षिण कोरिया और ऑस्ट्रेलिया की बहुत सारी कंपनियां भारत को वैकल्पिक मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में देखती हैं। इनमें पहले दो मुल्कों के पास जमीन की जबर्क़ी तीसरे के पास मैनपावर की काफी कमी है। भारत उन्हें मैन्युफैक्चरिंग के लिए पर्याप्त जमीन, प्रशिक्षित मैनपावर और अच्छा-खासा बाजार उपलब्ध करा सकता है। इन विदेशी कंपनियों के रुख को भांपकर भारत सरकार ने कोरोना संकट से उबरने के बाद मेक इन इंडिया को गति देने के मकसद से अभी भी काम करना शुरू कर दिया है। जब चीन में कोरोना के असर के चलते विदेशी कंपनियों का कामकाज ठप पड़ा था, तब कई विशेषज्ञों ने यह बात कही थी कि भारत के लिए एक बड़ा अवसर पैदा होने जा रहा है। पिछले दिनों विभिन्न राज्यों के मुख्यांत्रियों से बात करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस ओर इशारा करते हुए कहा था कि राज्य अगर रिफॉर्म करने की दिशा में आगे बढ़ते हैं, तो इस संकट को हम बहुत बड़े अवसर में बदल सकते हैं। हमारे देश में पैंतीस साल से कम उम्र की सबसे बड़ी जनसंख्या है और साइंस-इंजीनियरिंग ग्रेजुएट्स की बहुत बड़ी तादाद हमारे पास है। कुल मिलाकर सस्ता श्रम, बड़ा टैलेंट पूल और स्किलड मैनपावर की उपलब्धता भारत को बाकी देशों की तुलना में काफी सस्ता और आकर्षक बना देती है। दुनिया में सबसे अधिक अंग्रेजी बोलने वाले वाले भी भारत में ही हैं, जिसकी कमी चीन में एक बड़ी समस्या है। आज की तारीख में सबसे अधिक अंग्रेजी बोलने वाले वाले भी भारत में ही हैं, जिसकी कमी चीन में एक बड़ी समस्या है।

में हमें इसका भी लाभ मिल सकता है। इस अभियान को बढ़ावा देने के लिए उद्योग और वित्त मंत्रालय के साथ तमाम देशों में मौजूद भारत के दूतावास भी गंभीरता से लगे हुए हैं। देश में मैन्युफैक्चरिंग को मजबूती देने के लिए केंद्र सरकार ने पिछले साल सितंबर में कॉर्पोरेट टैक्स को घटाकर 25.17



फीसदी कर दिया था, जबकि नई फैक्ट्रियां लगाने वालों के लिए इसको घटाकर 17 फीसदी पर ला दिया था, जो दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों से कम है। इसके अलावा कुछ और बातें भी भारत के हक में जाती हैं। उसमें सबसे प्रमुख है सस्ते प्रशिक्षित श्रम की उपलब्धता। श्रम की लागत भारत में बांग्लादेश आदि की तुलना में काफी बड़ी है, फिर भी यह चीन से नीचे है। यदि केंद्र और राज्य सरकारें यह चाहती हैं कि चीन से निकलने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत की ओर रुख करें तो उन्हें इन कंपनियों के लिए उपयुक्त आधारभूत ढांचा और अनुकूल माहौल उपलब्ध कराने का काम

प्राथमिकता के आधार पर करना होगा। सरकारें इससे परिचित ही होंगी कि जरूरत केवल श्रम कानूनों को दुरुस्त करने की ही नहीं, नौकरशाही के मिजाज को भी ठीक करने की है। यह आसान काम नहीं। यह सही है कि बीते कुछ समय में देश में कारोबारी माहौल एक हद तक सुगम बना है, लेकिन अभी वह इतना आकर्षक भी नहीं कि बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत की ओर खिंची चली आएँ।आखिर यह एक तथ्य है कि हाल में जिन बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने चीन से अपने कारखाने हटाए हैं उन्होंने वियतनाम अथवा ताइवान को तरजीह दी है। बेहतर हो कि केंद्र और राज्य सरकारें उन कारणों की तह तक जाएं जिनके चलते बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत आने को लेकर बहुत उत्साहित नहीं। निस्संदेह इस संकट काल में चीन से बहुराष्ट्रीय कंपनियों का पलायन भारत के लिए एक अवसर है, लेकिन इस अवसर को भुनाने के लिए जो कुछ करना है उसमें देर नहीं की जानी चाहिए। अच्छा होगा कि केंद्र सरकार कोई नजीर पेश करके दिखाए।

आवश्यक तो यह है कि इसके लिए संबंधित मंत्रालयों की कोई संयुक्त टीम गठित कर तत्परता का परिचय दिया जाए, क्योंकि ये कंपनियां भारत सरकार या फिर राज्य सरकारों के निमंत्रण का इंतजार नहीं करने वालीं। केंद्र सरकार को इससे अवगत होना चाहिए कि चीन से निकलने का मन बन चुकीं सैक.ों कंपनियों के लिए पसंदीदा ठिकाना वियतनाम, ताइवान, थाईलैंड, इंडोनेशिया, मलेशिया आदि हैं। ऐसा इसीलिए है, क्योंकि भारत के मुकाबले इन देशों में कहीं अधिक उपयुक्त माहौल और सुविधाएं हैं। क्या ऐसी सुविधाएं भारत में हैं? दावे कैसे भी किए जाएं, हकीकत कुछ और ही है।

पाठकों की बात

पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

सुना है उसे गुरूर

सुना है उसे गुरूर हो गया है बड़ा अपनी प्रतिष्ठा और चालाकी का पर हमें तो गुरूर है हमारी फ़कीरी पर सुरूर रहता है हमें भी बेख्याली का अहल ए चमन उसका दौलत ने सजाया है हमने तो रब की इबादत को शौहरत बनाया है एक वो है जो भटकता है प्रतिस्पर्धा में सयाना हमने तो सूफी ताबीर को मयखाना बनाया है।

- रेनुमनोज श्रीवास्तव

ताल-तलैये सूख गये

ताल-तलैये सूख गये, नदियों की भी यही कहानी प्यासा पनघट पर बैठ है, भरकर आँखों में पानी कोई भगीरथ बन वापस लाओ, सूखे जलस्रोतों को जीव-जंतु में आ जाये फिर, जीवन की नई रवानी।

- सुशील भोले

खास पत्नी | बात बात पे रूठ जाओगे

बात बात पे रूठ जाओगे, तो कैसे चलेगा,आँखों में प्यार छुपाओगे, तो कैसे चलेगा, अजनबी भी कहते हो और मिला भी हमसे, बेवफ़ अगर हमको कहोगे, तो कैसे चलेगा, माना कि बला का भरोसा है इस किस्मत पे, वक़्त को मगर आजमाओगे, तो कैसे चलेगा, कुछ अजीब सी ख्वाइशें रखता हूँ मैं हज़ूर, आधे हर बात मान जाओगे, तो कैसे चलेगा, हज़र-ओ-इल्म को हलीमी सिखाये, ओकात से ऊँचे उठ जाओगे, तो कैसे चलेगा, या मसीहा है या हैवान इस शहर में साहब, सीधा-साधा सा इंसान बनोगे, तो कैसे चलेगा, ‘दश’ मुहब्बत के लिए इक उमर भी कम लगे, बैर-ओ-नफ़रतें गर बढ़ाओगे, तो कैसे चलेगा। - विकास शर्मा ‘दश’

जिंदगी है छोटी, हर हाल में खुश हूं

जिंदगी है छोटी, हर हाल में खुश हूं। कल काम से खुश था, आज आराम से खुश हूँ। दोस्तों का साथ नहीं, अकेला ही खुश हूं। आज कोई नाराज है, उसके इस अंदज से खुश हूँ। जिस को देख नहीं सकता, उसकी आवाज से खुश हूँ। जिसको पा नहीं सकता, उसको सोच कर खुश हूँ। बीता कल जा चुका है, उसकी मीठी याद में खुश हूँ। आने वाले कल का पता नहीं, इंतज़ार में खुश हूँ। हंसता हुआ बीत रहा है पल, आज में खुश हूँ। जिंदगी है छोटी, हर हाल में खुश हूँ। - राकेश मिश्रा

उदास बंजर सी खामोशी में

उदास बंजर सी खामोशी में एक एहसास बन आना और पूछना कैसी हो मन वन हो उठता है यूँ तो हवा रूखी हो उठी है तुम्हारा ये कहना सब ठीक हो जाएगा इंद्र धनुष हो छ जाती है मन की छटा थोड़ी सी फिफ़ होसले दे जाती है विकट परिस्थियों में मुस्कराने की। - प्रतिमा शर्मा

नयनो के गहरे इन सागर में

नयनो के गहरे इन सागर में डूब मरे कई नयनो की भाषा पढ़ पाओ तो प्रीत कहो। रूप रंग की चाहत पाले हैं संसार सारा तुम रूह का रंग पहचान पाओ तो प्रीत कहो। वस्त्र वहीन रूप देखने की लालसा पुरुख करे कभी चुनर डालने की लालसा हो तो प्रीत कहो। भीड़ में मिल जातें हैं रूप रंग वाले यदा कदा बिना रूप के प्यार की चाह हो अगर तो प्रीत कहो एक पल देखा और प्यार हो जाता है कईयों को प्यार का वास्तविक अगर जानते हो तो प्रीत कहो। - प्रीती श्रीवास्तव

मैं क्या जानूँ कविता करना

मैं क्या जानूँ कविता करना पत्रों पे लिख जादू भरना भावों को छूकर लय बनना सागर में डूब तिरते रहना मैं क्या जानूँ कविता करना कविता होकर फिरती है आज शब्दों की एक टोली बनकर जलते जिसमे हर रोज कहीं ख्वाहिश व ख्वाब होली बनकर कविता हो वही सार्थक भी जिसमे बिकने की साथ न हो भावों के सँग होकर गुजरे पत्रो पर कुटिल सा साथ न हो। - मधुलिका शुक्ला

मेहनत लगती है.. सपनो को सच बनाने मे

मेहनत लगती है.. सपनो को सच बनाने में, हौसला लगता है.. बुलन्दियों को पाने में, बरसो लगते है जिन्दगी बनाने में, और जिन्दगी फिर भी कम पडती है.. रिश्ते निभाने में।

- सुनित लाहीरी

कितने सच्चे कितने अपने थे वो रिश्ते

कितने सच्चे कितने अपने थे वो रिश्ते कच्चे मकां कच्चे चूल्हे कच्ची मिट्टी के आज तो है बस सूनापन फेब के घर दीवार डगर नगर और दिल भी लापता।।।

- मीनाक्षी सुकुमारन

QUIZ TIME

1) ब्रह्मपुत्र नदी को अमस में किस नाम से जाना जाता है? (सियांग) / लुट या दिलो)

2) जहाँगीर के दरबार में पक्षियों का सबसे बड़ा चित्रकार निम्नलिखित में से कौन-सा था? (क) दसवन्त (ख) सावन्त (ग) मोंट्यू (घ) अबुल फजल)

3) भारतीय संविधान में लोक सेवा आयोग का प्रावधान किस अनुच्छेद के तहत किया गया है?

4) कौन-सी संख्या नीचे दिए गए संबंध को

सर्वोत्तम ढंग से पूर्ण करेंगे?

6: 36 :: 8 : ?

(क) 46 (ख) 49 (ग) 47 (घ) 48

5) यह मंदिर ब्रह्मपुत्र नदी के बीच में मोर द्वीप में स्थित है और यह दुनिया में सबसे छोटे बसे हुए नदी द्वीप के रूप में जाना जाता है मंदिर का नाम बताएं?

उत्तरमात्रा- (4) 48 (5) अमस देवब्रत (4) 48 (5) अमस देवब्रत (4) 48 (5) अमस देवब्रत

Ramaquiz

आज का इतिहास

नई दिल्ली । 1030- गजनी के सुलतान महमूद का निधन। 1598 - अमेरिका में पहली बार थियेटर का आयोजन। 1725 - ऑस्ट्रिया के सम्राट चार्ल्स छठे और स्पेन के राजा फिलिप पंचम ने वियना की संधि पर हस्ताक्षर किए। 1754 - ग्वाटेमाला के सार्जेंट मेयर मेलचोर डे मेनकोस वाई वॉन और उनकी सेना ने सैन फेलिप और कोबा लैगून की लड़ाई में ब्रिटिश समुद्री डाकू को पराजित किया। 1763 - संसद के सदस्य एवं पत्रकार जॉन विल्केस को टॉवर ऑफ लंदन में प्रतिबंधित किया गया। उन पर देशद्रोह का आरोप लगाया गया। 1789 - जॉर्ज वाशिंगटन अमेरिका के पहले राष्ट्रपति चुने गए। 1794 - बॉलुओ की लड़ाई लड़ी गई, जिसमें प्रंसीसी सेना ने जनरल यूनिनयन के तहत स्पेन को हराया।

ट्रंप ने कोरोना को लेकर चीन पर हमले तेज किए

निगम को प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के तौर पर इस्तेमाल करने के आदी हो चुके हैं।

